Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848 : Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

मार्च/2022ई०

MONTHLY **ANSARULLAH** QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

MARCH-2022

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆ 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Baig ✆ 9915223313

Annual Subscription: Rs-250/- | Per Issue: Rs-25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

सरकारी पुस्तकालय बिहार (पटना) में जमाअति पुस्तक रखने के लिए इंचार्ज साहब को भेंट करते हुए श्री शाह महमूद अहमद साहब नाज़िम अनसरुल्लाह पटना।

मज्लिस अंसारुल्लाह चिंता कुंटा (तेलंगाना) द्वारा 20-02-2022 को संदीपा स्कूल के बच्चों और स्टाफ़ को फल तक़सीम करते हुए श्री जे ज़हूर अहमद साहब रुकुन अंसारुल्लाह भी उपास्थित हैं।

13-02-2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह सेंट थॉमस (चेन्नई) द्वारा आयोजित जलसा सीरतुन्नबी के अवसर पर एक ग्रुप फ़ोटो ।

13-02-2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह सेंट थॉमस (चेन्नई) द्वारा आयोजित जलसा सीरतुन्नबी के अवसर पर अंसारुल्लाह का लोगो प्रधान कर्त हुए ।

मज्लिस अंसारुल्लाह चिंता कुंटा (तेलंगाना) द्वारा 20-02-2022 को संदीपा स्कूल के बच्चों और स्टाफ़ को श्रीमती स्वर्ण सुधाकर रेड्डी ज़ड पि चेयर पर्सन ज़िला महबूब नगर फल तक़सीम करते हुए ।

मज्लिस अंसारुल्लाह चिंता कुंटा (तेलंगाना) द्वारा 20-02-2022 को संदीपा स्कूल के बच्चों और स्टाफ़ को फल तक़सीम किए गया श्री वज़ीर बाबू साहब अमीर ज़िला ने दुआ करवाकर आरम्भ किया ।

13-02-2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह सेंट थॉमस (चेन्नई) द्वारा आयोजित जलसा सीरतुन्नबी के अवसर पर स्टेज का दृश्य ।

13-02-2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह सेंट थॉमस (चेन्नई) द्वारा आयोजित जलसा सीरतुन्नबी के अवसर पर श्री रफ़ीक़ अहमदफ़ मद्रासी मुबल्लिग़ इंचार्ज भाषण देते हुए।

13-02-2022 को शिमोगा (कर्णाटक) द्वारा आयोजित जलसा सीरतुन्नबी के अवसर पर हाज़िरीन का दृश्य ।

13-02-2022 को शिमोगा (कर्णाटक) द्वारा आयोजित जलसा सीरतुन्नबी के अवसर पर स्टेज का दृश्य ।

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
ताहिर अहमद बेग
Ph. +91 99152 23313

कम्पोज़िंग
आसमा तय्यबा

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰہِ
سورۃ الصف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 20 मार्च 2022 **Issue - 3**

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के धैर्य की घटनाएं	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन क़ुर्आं के गिर्द घूमू काबा मेरा यही है	6
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का प्रादुर्भव पहली बैअत का एतिहासिक परिपेक्ष्य	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

هُوَ الَّذِیۡ بَعَثَ فِی الۡاُمِّیّٖنَ رَسُوۡلًا مِّنۡهُمۡ یَتۡلُوۡا عَلَیۡهِمۡ اٰیٰتِهٖ وَیُزَکِّیۡهِمۡ وَیُعَلِّمُهُمُ الۡکِتٰبَ وَالۡحِکۡمَةَ ۚ وَاِنۡ کَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ لَفِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ ۙ○ وَّاٰخَرِیۡنَ مِنۡهُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِهِمۡ ؕ وَهُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُ ○

(सूरत अल-जुम्अ:आयत 3,4)

अनुवाद - वही है जिस ने अनपढ़ लोगों में इन्हीं में से एक महान रसूल भेजा है। वह उन पर उस की आयतों की तिलावत करता है और उन्हें पवित्र करता है और उन्हें किताब की और हिक्मत की शिक्षा देता है जब कि इस से पहले वह अवश्य खुली खुली गुमराही में थे।

दर्सुल हदीस

عَنۡ اَبِیۡ هُرَیۡرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡهُ قَالَ: قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیۡهِ وَسَلَّمَ: وَالَّذِیۡ نَفۡسِیۡ بِیَدِهٖ لَیُوۡشِکَنَّ اَنۡ یَّنۡزِلَ فِیۡکُمُ ابۡنُ مَرۡیَمَ حَکَمًا عَدۡلًا فَیَکۡسِرُ الصَّلِیۡبَ وَیَقۡتُلُ الۡخِنۡزِیۡرَ وَیَضَعُ الۡحَرۡبَ وَیُفِیۡضُ الۡمَالَ حَتّٰی لَا یَقۡبَلَهٗ اَحَدٌ حَتّٰی تَکُوۡنُ السَّجۡدَةُ خَیۡرًا مِنَ الدُّنۡیَا وَمَا فِیۡهَا ۔

(मिशकात, किताबुल फ़ितन, बाब नुज़ूल ईसा इब्न मर्यम)

अनुवाद - :: हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाह वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया " क़सम उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी जान है शीघ्र तुम में ईसा पुत्र मर्यम नाज़िल होगा जो सहीह फैसला करने वाला, न्याय से काम लेने वाला होगा। वह इतना माल लुटाएगा कि कोई उस को स्वीकार न करेगा। ऐसे समय में एक सिज्दा दुनिया और उस की समस्त चीज़ों से बेहतर होगा। अर्थात भौतिकता के बढ़ावा के ज़माना होगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

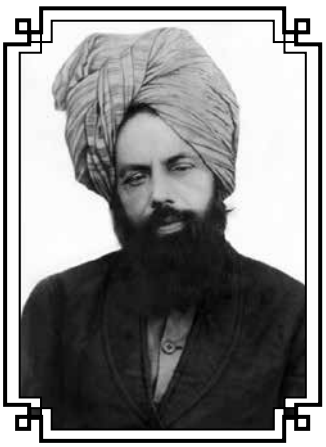

मुझे ख़ुदा ताला ने इल्म-ए-क़ुरआन बख़्शा है सो मेरी तरफ़ आओता इस नेअमत से तुम भी हिस्सा पाओ

"हे इस्लाम के बुज़र्गो ख़ुदा तआला आप लोगों के दिलों में समस्त फ़िक्रों से बढ़कर नेक इरादे पैदा करे और इस नाज़ुक वक़्त में आप लोगों को अपने प्यारे धर्म का सच्चा सेवक बनाए। मैं इस समय केवल अल्लाह तआला के लिए इस ज़रूरी बात से सूचना देता हूँ कि मुझे ख़ुदा तआला ने इस चौदहवीं सदी के सिर पर अपनी तरफ़ से मामूर कर के इस्लाम धर्म की नवीनीकरण और समर्थन के लिए भेजा है ताकि में इस फित्नों वाले ज़माना में क़ुरआन की खूबियां और हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की महानताएं प्रकट करूँ और उन समस्त दुश्मनों को जो इस्लाम पर हमला कर रहे हैं इन नूरों और बरकतों और चमत्कारों और इलाही ज्ञानों की मदद से जवाब दूं जो मुझको प्रदान किए गए हैं।"

(बरकातुद्दुआ रुहानी ख़ज़ाइन भाग 6 पृष्ठ 34)

"मैं प्रत्येक मुस्लमान की सेवा में नसीहत से कहता हूँ कि इस्लाम के लिए जागो कि इस्लाम बहुत बड़े फ़ित्ना में पड़ा है। इस की सहायता करो कि अब यह ग़रीब है और मैं इसी लिए आया हूँ और मुझे ख़ुदा तआला ने क़ुरआन का ज्ञान प्रदान किया है और अपनी किताब हक़ायक़ मआरिफ़ के मेरे पर खोले हैं और चमत्कार मुझे प्रदान किए हैं अत: मेरी तरफ़ आओ ताकि इस नेअमत से तुम भी हिस्सा पाओ। मुझे क़सम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है कि मैं ख़ुदा ताआला की तरफ़ से भेजा गया हूँ। क्या ज़रूरी न था कि ऐसे बड़े फ़ित्ना वाली सदी के सिर पर जिसकी खुली खुली मुसीबतें हैं एक मुजद्दिद खुले खुले दावा के साथ आता। अत: शीघ्र मेरे कामों के साथ तुम मुझे पहचान लोगे हर एक जो ख़ुदा तआला की तरफ़ से आया उस वक़्त के उल्मा की अज्ञानता उस की मार्ग में रुकावट हुई। अन्त में जब वह पहचाना गया तो अपने कामों से पहचाना गया कि कड़वा वृक्ष मीठे फल नहीं ला सकता और ख़ुदा दूसरों को वे बरकतें नहीं देता जो अपनों को दी जाती हैं। हे लोगो इस्लाम बहुत कमज़ोर हो गया है और धर्म के शत्रओं का चारों तरफ़ से घेराव है और तीन हज़ार से ज़्यादा आरोपों की संकलन हो गया है। ऐसे वक़्त में हमदर्दी से अपना ईमान दिखाओ। और ख़ुदा के बहादुरों में स्थान पाओ। "

((बरकातुद्दुआ रुहानी ख़ज़ाइन भाग 6 पृष्ठ 37-36)

सम्पादकीय

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अनुपमीय धैर्य की घटनाएं

आचरण में धैर्य वह महान गुण है जिस के बारे में इस्लाम धर्म ने बहुत अधिक गुण दिया है। इसी कारण से अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुरआन में 90 बार इस का वर्णन किया है। अल्लाह तआला ने जहां भी धैर्य का वर्णन किया है "या अय्युहल्लज़ीन आमनू" से सम्बोधन किया है और कई स्थानों में इस का वर्णन नमाज़ और तक्वा के साथ किया है। धर्म के अधिकरत स्थान सब्र और धैर्य से जुड़े हुए हैं। क्योंकि आज्ञापालन और गुनाहों से बचना है धर्म है जिन की मूल नींव धैर्य है अल्लाह तआला ने सूरह अल्अस्र में ज़माना की क़सम खाकर इन्सान की असफलताओं का वर्णन किया तो उन मौमिनों को इस से अलग कर दिया जो नेक कर्म करते हैं और एक दूसरे को धैर्य की नसीहत करते हैं। अल्लाह तआला फरमाता है.....

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं " शक्तिशाली पहलवान वह व्यक्ति नहीं जो दूसरों को पछाड़ दे असल पहलवान वह है जो क्रोध के समय अपने आप पर क़ाबू रखता है।"

(सहीह बुख़ारी किताबुल अदब)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी अपने आक़ा के अनुकरण में परेशानियों के समय धैर्य को प्रकट किया।

(1) एक बार 1898 ई में मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब ने अपना एक गालियों से भरा हुआ रसाला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास भेजा। तो हुज़ूर से साहस और अपने आप पर क़ाबू रखा।

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लेखक शेख़ याक़ूब अली इर्फानी साहिब)

(2) एक ब्रहमो लीडर(अनिवाश मज़ूमदार बाबू) हुज़ूर से कुछ पूछ रहे थे। हुज़ूर उत्तर दे रहे थे इतने में एक मुंह फट विरोधी ने आकर बहुत अपमानजनक और गन्दे हमले आप पर किए। परन्तु आप शान्त रहे। अन्त में वह ख़ुद ही थक गया और उठ कर चला गया। बह्मो लीडिर बहुत अधिक प्रभावित हुआ और उस ने कहा यह आप का बहुत बड़ा आचरण का चमत्कार है।(इसी तरह)

(3) जालन्धर में मीर अब्बास अली साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के समक्ष बैठे हुए आरोप कर रहे थे। हुज़ूर बहुत प्रेम तथा दया से उस का उत्तर दे रहे थे। मीर साहिब का उत्तर बढ़ता जाता था। यहां तक कि वह स्पष्ट अशिष्टता पर उतर आए। और तू तू मैं मैं पर आ गया। परन्तु हुज़ूर फरमाते जनाब मीर साहिब आप मेरे साथ चलें मेरे पास रहें। अल्लाह तआला आप के लिए कोई चिन्ह प्रकट कर देगा। और आप का मार्ग दर्शन करेगा।

(4) एक बार हज़रत मसीह मौऊद औहिस्सलाम बड़ी मस्जिद में कोई लैक्चर या ख़ुत्बा दे रहे थे। एक सिख मस्जिद में घुस आया और सामने खड़े हो कर हज़रत साहिब को और आप की जमाअत को बहुत गन्दी गालियां देने लगा। और ऐसा शुरू हुआ के बस चुप होने का नाम न लेता था। परन्तु हज़रत साहिब ख़ामोशी से सुनते रहे। अन्त में जब इन गालियों की सीमा हो गई तो आप ने फरमाया कि दो आदमी इसे नर्मी से पकड़ कर मस्जिद से बाहर निकाल दें परन्तु

इसे कुछ न कहें। यदि यह न जाए तो हाकिम अली सिपाही से हवाले कर दें।

(सीरतुल मेहदी रिवायत नम्बर 281)

हज़रत मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन की तरफ से कोई गन्दा आदमी इस बात के लिए निर्धारित किया जाता था कि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को गालियां दे। अत: कई बार इस तरह हुआ कि सारी रात वह गालियां निकालता रहता था। और जब सेहरी का समय होता तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते कि अब इस को खाने को कुछ दो कि यह सारी रात गालियां निकाल निकाल के थक गया होगा। इस का गला ख़ुश्क हो गया होगा। "

(सीरतुल मेहदी रिवायत नम्बर 1130)

हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला फरमाते हैं

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का लगाया हुआ यह हर भरा बाग़ जो है यह तो धैर्य और दुआ के पानी से सींचा जा रहा है और इन्शा अल्लाह तआला फैलता फूलता रहेगा। तो धैर्य और दुआ के साथ हर अहमदी अल्लाह तआला से बढ़ कर मदद मांगे और इस हरे , बढ़ने और फलने और फूलने वाले वृक्ष का हिस्सा बना रहे। अल्लाह तआला हम सब को इस की तौफ़ीक प्रदान फरमाए।"

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

क़ुर्आं के गिर्द घूमूं काबा मेरा यही है

अल्लाह तआला ने अपने वादों के अनुसार अहमदिया जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सालम को ऐसे समय में क़ुर्आनी ज्ञान तथा मआरिफ को दुनिया में फैलाने के लिए भेजा जब मुसलमानों के दिलों से क़ुर्आन के एक ज़िन्दा और जीवन प्रदान करने वाली किताब होने का आशा समाप्त हो चुकी थी। वे इस बरकत वाले कलाम को छोड़ कर एक मुर्दा क़ौम की तरह हो चुके थे और उन में रूहानियत नाम की कोई चीज़ बाक़ी न थी। अत: आप ने मौखिक तथा लेखनी के द्वारा तथा अन्य माध्यमों से कुर्आन मजीद की महानता तथा शान को इस प्रकार प्रभावकारी ढंग से वर्णन किया कि प्यासी रूहें आप के इर्दगिर्द इकट्ठा होना शुरू हो गईं। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपनी समस्त पुस्तकों में कुर्आन की बुलन्द शान को बहुत प्रचुरता से वर्णन किया है जिसे पढ़ कर नेक प्रकृित रखने वाले इन्सान प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। कुर्आन मजीद से आप की मुहब्बत तथा आस्था के नज़ारे आप के व्यवहारिक जीवन के अतिरिक्त आप के उर्दू अरबी और फारसी कलाम में दिखाई देता है। आप ने जिस प्रकार इश्क़ में डूबे हुए शब्दों में कुर्आन के उपकार, उस की विशेषताओं और अनगिनत गुणों का वर्णन फरमाया है उन्हें पढ़ कर इन्सान का दिल अपने आप पुकार उठता है

जमालो हुस्ने कुर्आं नूरे जाने हर मुसलमां है
क़मर है चांद औरों का हमारा चांद कुर्आं है
नज़ीर उस की नहीं जमती नज़र में फिक्र कर देखा
भला क्यों कर ने हो यक्ता कलामे पाक रहमां है

(ब्राहीन अहमदिया भाग 3 रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 198 से 200)

क़ुर्आन मजीद के द्वारा ख़ुदा तआला को पाने के वर्णन में आप फरमाते हैं

"हम ने इस वास्तविकता को जो ख़ुदा तक पहुंचाती है क़ुर्आन से पाया हम ने इस ख़ुदा की आवाज़ सुनी और उस के ताकत वाले बाज़ु के निशान देखे जिस ने क़ुर्आन को भेजा।

(किताबुल बरिया रूहानी ख़जायन भाग 13 पृष्ठ 65)

क़ुर्आन की महानता का वर्णन करते हुए आप फरमाते हैं

" जीवित धर्म वही होता है जिस पर हमेशा के लिए जीवित ख़ुदा का हाथ हो अत: वह इस्लाम है। क़ुर्आन में दो नहरें अब तक मौजूद हैं एक बौधिक तर्कों की नहर दूसरी आसमानी निशानों की नहर।"

(वही पृष्ठ 93-92)

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने जब इश्क की आंख से अपने महबूब के कलाम को देखा तो आप उस को आशिक़ हो गए। तब क़ुर्आन करीम ही आप के जीवन का केन्द्र बन गया। हुज़ूर अलैहिस्सालम इसी जोश का वर्णन करते हुए अपनी नज़्म में फरमाते हैं

दिल में यही है हर दम तेरा सहीफा चूंमूं
कुर्आं के गिर्द घूमूं काबा मेरा यही है

(कादियान के आर्या और हम, रूहानी ख़ज़ायन

भाग 20 पृष्ठ 457)

कुर्आन की तफसीर लिखने का चैलन्ज देते हुए आप फरमाते हैं कि

" मैं सच सच कहता हूं कि अगर कोई मौलवी इस देश के समस्त मौलवियों में से कुर्आन के मआरिफ में मुझ से मुक़ाबला करना चाहे और किसी सूरत की एक तफसीर मैं लिखूं और एक कोई और विरोधी लिखे तो वह बहुत अपमानित होगा और मुक़ाबला नहीं कर सकेगा।"

(ज़मीमा अन्जामे आथम रूहानी ख़ज़ायन भाग 11 पृष्ठ 292)

हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फरमाते हैं

" हम अहमदी सौभाग्यवान हैं कि इस ज़माना में हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार करने की तौफीक़ मिली.... जिन्होंने क़ुर्आन करीम के ऐसे छुपे हुए ख़ज़ाने जिन तक एक साधारण आदमी पहुंच नहीं सकता था उन ख़ज़ानों के बारे में खोल कर वर्णन कर दिया।... सरल कर के , खोल कर क़ुर्आन करीम की नसीहत हमें पहुंचाई इस पर अनुकरण करना चाहिए। और यदि कोई इन नसीहतों पर अनुकरण नहीं करता, जिन का ख़ुदा तआला से ज्ञान पाकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विस्तार वर्णन किया है, तो यह उस का दुर्भाग्य है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 सितम्बर 2004 ई)

अल्लाह तआला हम सब को क़ुर्आन करीम की शिक्षाओं पर अनुकरण करने का सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन

अताउल मुजीब लोन

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Maqbool Ahmed
Cell : 9949310679
: 9949209561

Plant Medicine

Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles

H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

Mob: 9008510546

Akmal Tailor

Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030

زبیر احمد شحنہ

ZUBER

Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का प्रादुर्भव
पहली बैअत का एतिहासिक परिपेक्ष्य

(अहमद सादिक़ राथर, मुबल्लिग़ सिलसिला जमाअत-ए-अहमदिया यारीपुरा ,कश्मीर

هُوَ الَّذِیْ بَعَثَ فِی الْاُمِّیّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِهٖ وَیُزَكِّیْهِمْ وَیُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ۙ وَّاٰخَرِیْنَ مِنْهُمْ لَمَّا یَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ؕ

(सूरत अल्जुम्अ 3,4)

अनुवाद: वही है जिसने अनपढ़ लोगों में इन्ही में से एक महान रसूल भेजा। वह उन पर इस की आयतों की तिलावत करता है और उन्हें पवित्र करता है और उन्हें किताब की और हिक्मत की शिक्षा देता है जबकि इस से पहले वे अवश्य खुली खुली गुमराही में थे।

तेरहवीं सदी हिजरी का अन्त और चौदहवीं सदी का आरम्भ यह वही ज़माना था जो "ज़हरल फ़साद फिल बिर्रे वलबहर" का नज़ारा पेश कर रहा था। उम्मत फ़िर्क़ों में बट चुकी थी ,ईमान दिलों से निकल कर सुरिय्या सितारे पर जा चुका था। मज़हब की तरफ़ सम्बन्धित होने वाले लोगों की रूहानियत दार्शनिक ,नास्तिकों और तथाकथित धार्मिक लीडरों के विचारों और ख़राब आस्थाओं के कारण से ख़राब हो रही थी। दज्जाली फ़ित्ने अपने चरम पर थे

इसी तरह हमारे प्यारे आक़ा अहमद मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस ज़माने के मुस्लमानों का नक़्शा खींचते हुए फ़रमाते हैं कि

لَا یَبْقٰی مِنَ الْاِسْلَامِ اِلَّا اِسْمُهٗ وَلَا یَبْقٰی مِنَ الْقُرْاٰنِ اِلَّا رَسْمُهٗ مَسَاجِدُهُمْ عَامِرَةٌ وَهِیَ خَرَابٌ مِّنَ الْهُدٰی، عُلَمَآءُهُمْ شَرُّ مَنْ تَحْتَ اَدِیْمِ السَّمَآءِ

(मिशकात किताबुल इलम अध्याय 3 पृष्ठ 38)

अर्थात इस्लाम केवल नाम का रह जाएगा और क़ुरआन-ए-मजीद के केवल शब्द बाक़ी रह जाऐंगे ,उन की मस्जिदें ज़ाहिर में आबाद होंगी परन्तु हिदायत से ख़ाली होंगी ,उन के उल्मा आसमान के नीचे निकृष्ट होंगे।

अत: जब चौदहवीं सदी का आरम्भ हुआ तो मुस्लमानों की इतनी ख़राब हालत हो गई कि जो वर्णन से नहीं की जा सकती। इस का नक़्शा खींचते हुए उर्दू भाषा के महान कवि ख़्वाजा अलताफ़ हुसैन हाली लिखते हैं:

रहा दीन बाक़ी न इस्लाम बाक़ी
इक इस्लाम का रह गया नाम बाक़ी

इसी तरह शयर-ए-मशरिक़ अल्लामा इक़बाल कहते हैं:

शोर है, हो गए दुनिया से मुसलमाँ नाबूद
हम ये कहते हैं कि थे भी कहीं मुस्लिम मौजूद
वज़अ में तुम हो नसारा तो तमद्दुन में हुनूद
यह मुस्लमान हैं जिन्हें देख के शरमाएँ यहूद
यूं तो सय्यद भी हो, मिर्ज़ा भी हो, अफ़्ग़ान भी हो
तुम सभी कुछ हो, बताओ तो तुम मुस्लमान भी हो

ऐसे ज़माना में ही दुनिया में रुहानी इन्क़िलाब की पुन: ज़रूरत थी। अत: इस इन्क़िलाब को पैदा करने के लिए ,आत्मा की पवित्रता के द्वारा और किताब तथा हिक्मत की वास्तविक शिक्षाओं से दुनिया को परिचित करके हक़ीक़ी ख़ुदा से मिलाने के लिए अल्लाह और इस के प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम ने एक महान मुस्लिह की ख़बर दी थी।

وَاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ

वाली आयत जब नाज़िल हुई तो सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि हे अल्लाह के रसूल यह आख़रीन कौन लोग हैं जिनमें हुज़ूर की दूसरी बिअसत होगी? इस पर आप ने इसी मज्लिस में मौजूद हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि के कंधे पर हाथ रखकर फ़रमाया:

لَوْ كَانَ الْاِيْمَانُ مُعَلَّقًا بِالثُّرَيَّا لَنَالَهٗ رَجُلٌ اَوْ رِجَالٌ مِنْ هٰؤُلَاءِ

(बुख़ारी किताबुत्तफसीर सूरत अलजमा)

अर्थात हे मेरे सहाबा ! अगर ईमान सरीया सितारा पर भी चला गया तो एक फ़ारसी अलासल शख़्स या अश्ख़ास इस ईमान को दुबारा दुनिया में क़ायम करेंगे

यह वही मुस्लेह है जिसको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इमाम महदी और मसीह मौऊद के नाम से याद फ़रमाया था। जिसने अंदरूनी तौर पर उम्मत मुहम्मदिया के सुधार का काम सरअंजाम देना था। और बाहरी तौर पर अन्य समस्त धर्मों पर इस्लाम की सच्चाई को स्पष्ट करते हुए इस धर्म को समस्त अन्य धर्मों पर प्रभुत्व देना था।

इस पर ज़माना में पंजाब की एक गुमनाम बस्ती कादियान में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम पैदा हुए। यहीं से आप अलैहिस्सलाम ने इस्लाम की प्रतिरक्षा का काम शुरू किया।

इस्लाम के पुनर्जागरण के लिए आपकी इन चेष्टाओं को देखकर आप के मानने वाले समय समय पर इस बात को प्रकट करते थे कि आप हमारी बैअत लें। अत: सूफ़ी अहमद जान साहिब अपने एक शेअर में आप से निवेदन करते हैं कि:

हम मरीज़ों की है तुम्हें पे नज़र
तुम मसीहा बनो ख़ुदा के लिए

इस बेचैनी के ज़माना में ख़ुदा तआला के वादों और आँहज़रत सल्लल्लाहो की भविष्वाणियों के अनुसार ज़माना की ज़रूरत को पूरा करते हुए हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी मसीह मौऊद व महदी मौऊद हो कर मबऊस हुए और आप ने ऐलान फ़रमाया कि:

वक़्त था वक़्त मसीहा न किसी और का वक़्त
मैं न आता तो कोई और आया होता

आप ने फ़रमाया:

(मुवाहिब अलरहमान रुहानी ख़ज़ाइन जल्द 19 सफ़ा 271)

अर्थात ख़ुदा की क़सम मैं ही मसीह मौऊद हूँ। और मेरे साथ रब-ए-वदूद है। ख़ुदा की क़सम ! वह मुझे नष्ट नहीं करेगा। चाहे मेरी दुश्मनी पहाड़ जैसी शख़्सियात करें। ख़ुदा की क़सम ! वह मुझे नहीं छोड़ेगा चाहे दोस्त और परिवार मुझे छोड़ दें। ख़ुदा की क़सम ! वह मुझे बचाएगा चाहे दुश्मन तलवारों के द्वारा भी मुझ पर वार करें

कितने अफ़सोस की बात है कि वही उल्मा जो दिन रात इस प्रतीक्षा में थे कि इमाम महदी और मसीह का प्रकटन होगा तो वह उम्मत के पतन को उन्नति में बदल देगा और उम्मत के लोगों का सुधार करके फिर एक बार उन में ईसवी रूह फूंक कर उनकी रुहानी मौत को अनश्वर ज़िन्दगी में तब्दील करेगा। वही उल्मा इस सच्चे मौऊद के प्रादुर्भव के समय अपने ख़राब आस्थाओं की बुनियाद पर विरोधियों की पहली सफ़ में खड़े हो गए। और विरोध का वह तूफ़ान पैदा कर दिया कि अगर अल्लाह का सच्चा मुस्लेह सामने न होता तो इस तूफ़ान के बहाव में ऐसा

बह जाता कि कहीं उसके वजूद का भी पता न लगता। लेकिन यहां अल्लाह का पहलवान था ,अल्लाह का सच्चा मसीह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सच्चा आशिक़ और ग़ुलाम था जिसके कारण से यह तूफ़ान ख़ुद ही समाप्त हो गया।

पहली बैअत का तारीख़ी परिपेक्ष्य

मुख़लसीन के दिलों मैं बरसों से यह तहरीक जारी थी कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बैअत लें। मगर हुज़ूर हमेशा यही जवाब देते थे कि मैं मामूर नहीं हूँ। आख़िर छः सात वर्ष बाद 1888 ई के पहले तीन महीनों में अल्लाह तआला की तरफ़ से आप को बैअत लेने का आदेश हुआ। यह रब्बानी आदेश निम्नलिखित शब्दों में आप को पहुंचा

اِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَ وَحْيِنَا اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ

(इश्तिहार 1 दिसम्बर 1888 ई पृष्ठ 2)

अर्थात जब तू इरादा कर ले तो अल्लाह तआला पर भरोसा कर और हमारे सामने और हमारी वह्य के अधीन (निज़ाम जमाअत) की किश्ती तैयार कर। जो लोग तेरे हाथ पर बैअत करेंगे अल्लाह तआला का हाथ उन के हाथों पर होगा।

हज़रत अक़दस की तबीयत इस बात से कराहत कर रही थी कि हर किस्म के लोग इस सिलसिला बैअत में दाख़िल हो जाएं। नवम्बर 1888 ई में बशीर अव्वल के देहान्त पर कुछ लोगों ने आप आप को नऊज़ बिल्लाह झूठा समझा और कुधारणा कर के अलग हो गए। अतः आपकी निगाह में यही अवसर इस बरकत वाले सिलसिले के आरम्भ के लिए उचित क़रार पाया और आप ने दिसम्बर 1888 ई को एक इश्तिहार के माध्यम से बैअत का ऐलान फ़र्मा दिया।

इस ऐलान के साथ जो बैअत के बारे में पहला ऐलान था। हज़ूर ने बैअत के लिए निर्धारित रूप से कोई विशेष शर्तें नहीं लिखी थीं। परन्तु इधर हज़रत मुस्लेह मौऊद 12 जनवरी 1889 ई को दस ग्यारह बजे रात को पैदा हुए और इधर आप ने "तकमील तब्लीग़"का इश्तिहार लिखा और इस में बैअत की वे दस शर्तें भी लिखीं जो जमअत में दाख़िला के लिए बुनियादी हैसियत रखती हैं। इस तरह इस सिलसिला की बुनियाद वास्तव में एक सुख़बर वाली औलाद जन्म के साथ जुडड़ी थी और वह सुख़बर वाली सन्तान वह थी जिसके लिए हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फ़रमाई थी जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की विशेष निशानी में से थी कि अर्थात वह शादी करेगा और इस से मुबश्शिर तथा मौऊद सन्तान होगी। इस तरह जमाअत अहमदिया और मौऊद पुत्र का जन्म एक साथ हुआ।

इस इश्तिहार के बाद हज़रत अक़दस कादियान से लुधियाना तशरीफ़ ले गए और हज़रत सूफ़ी अहमद जान साहिब के मकान में पधारे । यहां से आप ने 4 मार्च 1889 ई को एक और इश्तिहार में बैअत के उदश्शयों पर प्रकाश डाला।

इस इश्तेहार में आप ने लिखा कि दोस्त लुधियाना पहुंच जाएं ताकि बैअत ली जा सकें। बैअत के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बैअत की दस शर्तें लिखीं। 23 मार्च 1889 ई को जमाअत अमहदिया की पहली बैअत लुधियाना में ली गई। पहले दिन 40 लोगों ने बैअत की। बैअत का रिकार्ड रखने के लिए एक रजिस्टर तय्यार किया गया जिस के मुख पृष्ठ पर लिखा गया था। "बैअत तौबा बराए हुसूल तक्वा तथा पवित्रता।"